मोहन राकेश द्वारा रचित कहानी 'मलबे का मालिक'जो शीर्षक है,वह मेरे दृष्टिकोण से बिलकुल सार्थक है। मजहब,भाषा और बेबुनियाद वजहों के नाम पर जीवन को तबाह कर उसपर मालकीयत का दावा करने वाले रक्खा पहलवान जैसे हों या देश विहाजन कर अपनी राजनैतिक रोटियाँ सेंकनेवाले राजनेता सब मलबे का मालिक ही हो सकते हैं । इस कहानी में कहानीकार अपने प्रमुख पात्रों गनीमियाँ,चिराग और रक्खे पहलवान के माध्यम से देश विभाजन से होनेवाली सोने की चिड़ियाँ कहलाने वाली भारतमाता की दुर्दशा हो या चिराग के घर का मलबे में तबदील होना और फिर रक्खे पहलवान द्वारा मालकीयत का दावा ; कहानी के शीर्षक को सार्थक सिद्ध करता है ।

Scanned with CamScanner

'मलबे का मालिक' कहानी का उद्देश्य

मोहन राकेश द्वारा रचित कहानी 'मलबे का मालिक' ने व्यक्तिगत स्वार्थ की मालकीयत किस कदर बसे-बसाये घर को सामाजिक और राष्ट्रिय परिपेक्ष्य में मलबे में तबदील कर देता है, उसे बखूबी बताया है।

(i)देश विभाजन की त्रासदी:-

व्यक्तिगत स्वार्थ का दायरा जब राष्ट्र स्तर तक बढ़ जाता है तो देश विभाजन की त्रासदी जैसा मलबा उद्घाटित होता है । हाँ ,अपनी इस कुरूपता को मजहबी कपड़ा पहना देना बड़े हस्तियों के लिए आम बात हो गयी है ।

(ii)दंगों के आड़ में स्वार्थ साधना :-

जहां देश मजहब के नाम से मलबे में तबदील हो रहा था ,वहीं रक्खा पहलवान जैसे निकम्मे लोग भी खुद को मजहब का आला मानते हुये अपने निर्लज्ज स्वार्थ के लिए चिराग जैसे मेहनतपरस्त पारिवारिक लोगों का निर्मम अंत कर देते हैं ।

Scanned with CamScanner